एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 10 (अक्टूबर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

वन संसाधनों का क्षरण और कृषि वानिकी का महत्व

*संजय सिंह जाटव, सुनील उपाध्याय, एस. बी. अग्रवाल एवं पंकज शर्मा
कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्यप्रदेश), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sssisodiya2012@gmail.com

वन संसाधनों का क्षरण आज भारत सहित पूरे विश्व के लिए एक गंभीर समस्या बन चुकी है। कृषि विस्तार, जनसंख्या वृद्धि, और ईंधन व लकड़ी की बढ़ती मांग ने वनों पर अत्यधिक दबाव डाला है। इस लेख में वनों के क्षरण के प्रमुख कारणों का विश्लेषण किया गया है तथा कृषि एवं वानिकी के एकीकृत दृष्टिकोण—कृषि वानिकी (Agroforestry)—की उपयोगिता को रेखांकित किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि वानिकी भूमि उपयोग को अधिकतम करने, ग्रामीण आजीविका सुधारने तथा सतत विकास को सुनिश्चित करने का प्रभावी साधन है।

परिचय (Introduction)

वन मानव सभ्यता की नींव रहे हैं। ये न केवल जीवनदायिनी वायु, जल, और मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखते हैं, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। किंतु, वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और कृषि विस्तार ने वनों पर गंभीर दबाव डाला है। इस निरंतर विनाश ने भूमि की उर्वरता, जैव विविधता, और जलवायु स्थिरता को प्रभावित किया है। ऐसे में, कृषि वानिकी (Agroforestry) एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति के रूप में उभर कर सामने आई है जो कृषि और वानिकी को एकीकृत कर भूमि, पर्यावरण और आजीविका - तीनों के बीच संतुलन स्थापित करती है। यह लेख वनों के क्षरण के कारणों, कृषि-वानिकी के एकीकरण की आवश्यकता, और ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में इसकी उपयोगिता पर केंद्रित है।

वनों का क्षरण (Degradation of Forests):

वनों के क्षरण का एक प्रमुख कारण कृषि के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई रहा है। कृषि भूमि तैयार करने हेतु वनों को साफ किया गया, जिससे हमारे वन संसाधनों का भंडार लगातार घटता गया। भारत में वनों के क्षरण के लिए निम्नलिखित कारण जिम्मेदार हैं-

- कृषि हेतु भूमि तैयार करने के लिए वनों की कटाई।
- वन भूमि पर अवैध अतिक्रमण।
- झूम (स्थानांतरित) खेती की प्रथा।
- वनों में अत्यधिक चराई।
- पेड़ों की अधिक छाल उतारना (Over-lopping)।
- वनाग्नि (Forest Fires)।
- ईंधन लकड़ी का अत्यधिक दोहन।
- वनों की भूमि का गैर-वानिकी उपयोगों में रूपांतरण।

इन कारणों से न केवल वनों का क्षेत्रफल घटा है बल्कि जैव विविधता, मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरणीय संतुलन भी प्रभावित हुआ है।

कृषि और वानिकी का समन्वय (Integration of Agriculture and Forestry)

पिछले कई शताब्दियों से वानिकी और कृषि को पृथक गतिविधियों के रूप में विकसित किया गया था। किन्तु बीते कुछ दशकों में कृषि और वानिकी के पूरक संबंध को समझा गया और व्यवहार में अपनाया गया।

कृषि और वानिकी के एकीकरण से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। लाभों को निम्न प्रकार से वर्णित किया है

- भूमि के भिन्न-भिन्न भागों का उपयोग उनकी उपयुक्तता के अनुसार किया जा सकता है।
- गर्मियों में जो चरागाह क्षेत्र अप्रयुक्त रहते हैं, उनका उपयोग वानिकी कार्यों के लिए किया जा सकता है।

- भूमि पर विविध गतिविधियाँ अपनाने से आर्थिक जोखिम कम होता है।
- आवश्यकता पड़ने पर वन पूंजी के रूप में पेड़ों की बिक्री की जा सकती है।
- फसलों और पशुधन के लिए बेहतर आश्रय प्राप्त होता है।
- श्रम के उपयोग में लचीलापन बढ़ता है, जिससे पूरे वर्ष रोजगार के अवसर बने रहते हैं।
- कुल श्रम आवश्यकताओं, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में वृद्धि होती है।
- वित्तीय लचीलापन बढ़ता है क्योंकि लकड़ी की बिक्री को आवश्यकता अनुसार आगे या पीछे किया जा सकता है।
- भूमि के अधिकतम उपयोग हेतु, पेड़ों की कतारों के बीच चराई या चारे की फसलें उगाकर उत्पादन को सर्वोत्तम बनाया जा सकता है।

कठिनाइयाँ

- पर्याप्त भूमि का अभाव।
- कुशल प्रबंधन और श्रम की कमी।
- सहकारी समितियों के अंतर्गत प्रबंधन होने पर जटिलता बढ़ जाती है।
- भूमि स्वामी में कृषि और वानिकी दोनों के प्रति रुचि और तकनीकी ज्ञान का अभाव।

ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में कृषि वानिकी (Agroforestry and the Rural Setting)

पेड़ ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र में भूमि तथा समुदाय दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कृषि वानिकी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक सशक्त अंग बन सकती है।

ग्रामीण समाज में कृषि वानिकी के लाभ

उत्पाद / गतिविधि – लाभ:

- **ईंधन लकड़ी (Fuelwood):** अन्य ईंधनों की तुलना में सस्ती होती है, स्थानीय स्तर पर आसानी से उपलब्ध।
- **सामान्य लाभ:**

✓ भूमि पर अनेक गतिविधियों को अपनाने से आर्थिक जोखिम कम होता है।
✓ आवश्यकता पड़ने पर पेड़ों को बेचकर आर्थिक सहायता प्राप्त की जा सकती है।
✓ पशुओं और फसलों के लिए बेहतर आश्रय उपलब्ध होता है।
✓ पूरे वर्ष श्रमिकों को रोजगार मिलता है।
✓ सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है।
✓ लकड़ी की बिक्री में लचीलापन होता है।

इस प्रकार, कृषि वानिकी भूमि, समाज और अर्थव्यवस्था - तीनों के लिए सतत विकास का एक प्रभावी साधन है।

निष्कर्ष (Conclusion)

कृषि वानिकी न केवल भूमि उपयोग का सर्वोत्तम तरीका है बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण आजीविका, और सतत कृषि उत्पादन का भी आधार है। वनों के क्षरण को रोकने के लिए कृषि वानिकी प्रणाली को बड़े पैमाने पर अपनाना आवश्यक है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हुए पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।